59

मुझे कहानी सुनाओ

बाइबल पाठ #24

VI.तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमश:)।

त. पिरिया में सेवकाई (क्रमश:)

3. यीशु को एक फरीसी के घर बुलाया जाना, और पर्वों पर तीन उपयुक्त सबक (लूका 14:1-24)।
   क. विनम्रता पर एक सबक (लूका 14:7-11)।
   ख. नि:स्वार्थपन पर एक सबक (लूका 14:12-14)।
   ग. बड़ी दावत का दृष्टांत (लूका 14:16-24)।
4. यीशु के पीछे लोगों की भीड़ और एक महत्वपूर्ण सबक (लूका 14:25-35)।
5. चुंगी लेने वालों और पापियों का यीशु के पीछे आना और तीन हृदयस्पर्शी कहानियां, जिनसे एक सबक मिलता है (लूका 15:1-32):
   क. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (लूका 15:3-7)।
   ख. खोए हुए सिक्के का दृष्टांत (लूका 15:8-10)।
   ग. खोए हुए लड़के का दृष्टांत (लूका 15:11-32)।
6. यीशु अपने चेलों के साथ और अधर्मी भण्डारी के दृष्टांत में एक महत्वपूर्ण सबक (लूका 16:1-13)।
7. यीशु की फरीसियों द्वारा निगरानी और धनी आदमी और लाज़र के ''दृष्टांत'' में एक गम्भीर सबक (लूका 16:14-31)।

परिचय

कौन ऐसे माता-पिता होंगे, जिन्होंने ''कहानी सुनाओ'' शब्द न सुने हों? लगता है जैसे कुछ ही दिन पहले मेरी बेटियां मुझ से कह रही थीं, ''डैडी, हमें कहानी सुनाओ न।'' पिछली बार, जब मैं अपनी नातिन रेचल के साथ था तो वह मेरी गोदी में चढ़कर मुझ से कह रही थी, ''नानू, कहानी सुनाओ न।''

हम में से अधिकतर लोगों को कहानियां पसन्द होती हैं और यीशु को उन्हें सुनाना पसन्द था। उसकी सबसे अधिक याद रखी जाने वाली और सबसे प्रिय शिक्षा कहानियों के ही रूप में थी। हम उसकी इन कहानियों को ''दृष्टांत'' कहते हैं।[1] ''यीशु के सबसे प्रसिद्ध दृष्टांतों में से कुछ''[2] पिरिया की उसकी सेवकाई के समय कहे गए थे।[3] इस पाठ में दिए गए

दृष्टांत उपयुक्त प्रासंगिकता के साथ बिखरे हुए थे। अधिकतर दृष्टांत और इनसे सम्बन्धित शिक्षा, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से फरीसियों के लिए ही थी (देखें लूका 14:1; 15:2; 16:14)।

यीशु किसी भी विषय को लेकर उसकी कहानी बना लेता था, जिससे उस संदेश का महत्व समझाया जा सकता हो। इस पाठ में, हम उसे बड़े-भोज, भेड़ों और सिक्कों, पारिवारिक जीवन, व्यापार के लेन-देन तथा मृत्यु के बाद जीवन तक की कहानियां बताते देखेंगे।

मुझ दावतों में कार्य करने का ढंग बताने वाली कहानियां सुनाओ (लूका 14:1-24)

यीशु ने गलील में एक फरीसी के साथ (लूका 7:36-50) और यहूदिया में एक फरीसी के साथ खाया था (लूका 11:37-54)। अब उसे पिरिया में एक फरीसी के साथ खाने का निमन्त्रण मिला था[4] (देखें लूका 14:1, 12क)। यह तीसरा और अन्तिम लिखित समय था, जिसमें इस प्रकार का निमन्त्रण दिया गया और उसे स्वीकार किया गया।[5]

फरीसियों के घरों में मसीह के पिछले अनुभवों का अध्ययन करते हुए, हमने उसके मेज़बानों के इरादों का अनुमान लगाया था। इस बार हमें अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है। लूका ने लिखा है कि ''फिर वह सब्त के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया: और वे उसकी घात में थे'' (लूका 14:1; देखें लूका 11:53, 54)। संदर्भ से संकेत मिलता है कि वे ''उस पर नज़र रखे हुए थे'' कि वह सब्त की उनकी परम्पराओं को तोड़ता है या नहीं।

भोज पर ''एक मनुष्य उसके साम्हने था, जिसे जलन्धर का रोग था'' (लूका 14:2)। ''जलन्धर'' एक रोग है, जिस से शरीर से पानी निकलता रहता है।[6] यह हृदय के ठीक रीति से काम न करने का एक लक्षण है।[7] निस्संदेह फरीसी लोग इस रोगी को यीशु के पास यह देखने के लिए लाए थे कि वह सब्त के दिन उसे चंगा करता है या नहीं।

मसीह ने उस आदमी को चंगा ही नहीं किया, बल्कि अपने शत्रुओं को चुनौती देकर उन्हें चकित भी कर दिया: ''क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं?'' (आयत 3; देखें मरकुस 3:4)। ऐसा ही तर्क उसने पहले भी इस्तेमाल किया था (देखें मत्ती 12:11)। उसका तर्क सब्त के दिन कुएं में से बच्चे[8] को या जानवर को निकालने[9] में से एक बात को उचित ठहराने के आधार पर था (आयत 5)। उसके तर्क को हम इस प्रकार कह सकते हैं: ''यदि सब्त के दिन पानी [कुएं] में से तुम्हारे बच्चों को निकालना उचित है, तो सब्त के दिन परमेश्वर के लोगों में से एक को पानी [जलन्धर रोग] से निकालना गलत क्यों है?'' आयत 4 कहती है, ''परन्तु वे चुपचाप रहे। तब उसने उसे छूकर चंगा किया और जाने दिया।''

सचमुच में दीन बनें (14:7-11)

यीशु ने अवसर का इस्तेमाल कई सामयिक शिक्षाएं देने के लिए किया। सभी शिक्षाएं भोजों के विषय पर आधारित थीं। उसने ध्यान दिया था कि मेहमान लोग मेजबान के पास सम्मान वाली जगह ढूंढ़ते हैं (आयत 7; देखें मत्ती 20:21; 23:6)।[10] उसने सुझाव दिया कि पीछे वाली जगह चुनना अधिक समझदारी है (आयतें 8-10)। इसे ''दृष्टांत'' कहा गया (आयत 7) क्योंकि प्रभु चाहता था कि इसकी प्रासंगिकता जीवन के सब क्षेत्रों में बने: ''क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (आयत 11; देखें लूका 18:14; मत्ती 23:12)।

सचमुच में आतिथ्य सत्कार करने वाले बनें (14:12-14)

मसीह ने अपने मेज़बान की ओर मुड़कर उसे बताया कि उन अतिथियों को बुलाने का कोई लाभ नहीं, बदले में वैसा ही मोड़ सकते हों (आयत 12)। उसने उस आदमी से कहा, ''जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं'' (आयतें 13, 14क)।[11] इन शब्दों के साथ, प्रभु ने अपने मेज़बान पर ही नहीं, हम सब पर भी जो केवल अपने मित्रों को और अपने ''बराबर वालों'' का ''सत्कार'' करते हैं, दोष लगाया (देखें मत्ती 5:46, 47; लूका 6:32, 33)।

सचमुच में आज्ञाकारी बनें (14:15-24)

यीशु ने कहा कि सच्ची मेहमाननवाज़ी या आतित्थ सत्कार का प्रतिफल ''धर्मियों के जी उठने पर''[12] मिलेगा (आयत 14ख)। एक अतिथि ने यह मान कर कि वह मसीहा के आने वाले राज्य की बात कर रहा है,[13] कहा, ''धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा'' (आयत 15)। मसीह ने बड़े-भोज का एक दृष्टांत देकर उत्तर दिया।[14] उस भोज में बुलाए गए लोगों ने न आ पाने के कई बहाने बताए (आयतें 16-21)। क्रोधित मेज़बान ने, अपने साथ खाने पर शोषित[15] लोगों को बुला लिया (आयतें 21-23; आयत 13 से तुलना करें)।

इस दृष्टांत से कई सबक लिए जा सकते हैं, परन्तु इसे बताने का प्रभु का मुख्य उद्देश्य आयत 24 में मिलता है। स्वामी ने दास से कहा, ''क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन आमन्त्रित लोगों में से कोई मेरे भोज को न चखेगा।'' संदर्भ में, इसका अर्थ है कि ''तुम में से कई लोग जो *सोचते हैं* कि वे 'परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएंगे' वास्तव में वे नहीं खा पाएंगे!'' उन्होंने परमेश्वर के निमन्त्रण को ठुकराया था। उन्होंने उसके पुत्र के राज्य का भाग बनने के उसके निमन्त्रण को सुनने से अपने कान बन्द कर लिए थे। उन्होंने यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानने से इनकार किया था।

दृष्टांत में हम सब के लिए एक सबक है कि जब प्रभु आपको निमन्त्रण दे (मत्ती 11:28), तो बहाने न बनाएं, बल्कि उसके प्रेम को तुरन्त स्वीकार कर लें! तभी, और

केवल तभी आपको, उसके आत्मिक भोज में आनन्द लेने की आशा मिल सकती है (देखें प्रकाशितवाक्य 3:20)।

मुझे घर बनाने और युद्ध लड़ने के ढंग बताने वाली कहानियां सुनाओ (लूका 14:25-35)

गलील की आरम्भिक सेवकाई में हज़ारों लोगों की भीड़ यीशु के पीछे होती थी (मत्ती 4:25)। पिरिया में ''बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी'' (लूका 14:25)। मसीहा के लिए उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।[16] प्रभु ने इस जोशीली, परन्तु चंचल बुद्धि वाली भीड़ को अपने चेले होने की कीमत बताने के ज़ोर देने की आवश्यकता समझी (आयतें 26, 27)।[17]

उसने ''खर्च का हिसाब लगाने'' अर्थात मकान बनाना आरम्भ करने से पहले खर्च का हिसाब लगाने (आयतें 28-30) और युद्ध में जाने से पहले खर्च का हिसाब लगाने की आवश्यकता[18] (आयतें 31, 32) पर दो दृष्टांत दिए। फिर उसने चेला होने के दाम पर फिर से ज़ोर दिया (आयत 33),[19] और एक ''नमकीन'' उदाहरण जोड़ दिया, जो उसने पहले दिया था। उनके लिए उसके पीछे चलना अच्छा था, पर यदि वे आवश्यक बलिदान करने को तैयार नहीं थे, तो वे उस नमक की तरह होने थे, जिसका स्वाद खत्म हो जाता है और वह बद से भी बदतर बन जाता है (आयतें 34, 35; देखें मत्ती 5:13; मरकुस 9:50)।

मुझे खोई हुई भेड़, सिक्कों और लड़कों को ढूंढ़ने का ढंग बताने वाली कहानियां सुनाओ (लूका 15:1-32)

यीशु के सुनने वालों में ''चुंगी लेनेवाले और पापी'' थे (आयत 1; देखें लूका 7:34)। ''पापी'' शब्द हमें अजीब लग सकता है क्योंकि सब पापी ही तो हैं (रोमियों 3:23), परन्तु इस शब्द का इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया गया था, जिन्हें संसार और विशेष करके फरीसी लोग पापी मानते थे।

मसीह ने समाज के इन ठुकराए हुओं से अपने आप को दूर नहीं किया, बल्कि उनके साथ उसने खाना भी खाया (देखें मत्ती 9:10, 11)।[20] इससे फरीसी और शास्त्री बुड़बुड़ाने लगे, ''यह तो पापियों से मिलता है और उन के साथ खाता भी है'' (लूका 15:2)। उनकी कठोर मन वाली शिकायत से खोई हुई वस्तुओं की तीन कहानियों की यीशु के दृष्टांतों की प्रसिद्ध शृंखला दी गई।

खोया और पाया (15:1-24)

अगली कहानी जो मसीह ने बताई, वह एक चरवाहे की थी, जिसकी एक भेड़ खो गई थी और उसके मिल जाने पर उसने आनन्द किया था (आयतें 3-6)।[21] उसने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं''[22] (आयत 7)। उसने एक स्त्री की बात बताई जिसका एक सिक्का

खो गया था और मिलने पर उसने जश्न मनाया था (आयतें 8, 9)।[23] उसने कहा कि ''मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है'' (आयत 10)। फिर उसने ''उड़ाऊ[24] पुत्र'' का दृष्टांत बताया। इस पसन्दीदा कहानी के सम्बन्ध में, जॉन एफ. कार्टर ने लिखा है:

> हज़ारों लोग जिनके पाप से टूटे जीवनों ने उन्हें निराशा के किनारे ला दिया है, परमेश्वर के अनुग्रह पर गिराने के लिए प्रेरित हुए हैं; और ऐसा करके उन्होंने न केवल क्षमा तथा ईश्वरीय स्वीकृति को महसूस किया है, बल्कि विजयी जीवन के लिए सामर्थ भी पाई है।[25]

अन्त में उड़ाऊ पुत्र के घर लौट आने पर बड़ा आनन्द किया गया था (आयत 24)।

नाराज़गी से खोया (15:25-32)

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत बताते हुए हम प्राय: उसके घर लौटने के जश्न के साथ समाप्त करते हैं; कहानी का स्वाभाविक चरम यही है, परन्तु यीशु ने कहानी यहां खत्म नहीं की थी। दृष्टांत का मुख्य उद्देश्य पिता के आनन्द से बड़े भाई की नाराज़गी को अलग करना था (आयतें 25-30)।[26] दृष्टांत में बड़ा भाई फरीसियों को, बल्कि फरीसी ही नहीं, कोई भी जो खोए हुओं के प्रति लापरवाह रहता है और फिर प्रभु के पास उनके लौट आने पर प्रसन्न नहीं होता, दिखाया गया था। हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए जैसा पिता द्वारा अपने बड़े बेटे को कहे गए शब्दों में मिलता है: हमें ''आनन्द करना और मगन होना चाहिए'' क्योंकि एक बहुमूल्य आत्मा ''मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है'' (आयत 32)।

मुझे धन का इस्तेमाल करने का ढंग बताने वाली कहानी सुनाओ (लूका 16:1-13)

अधर्मी भण्डारी (16:1-9)

फिर, यीशु ने अपने चेलों की ओर मुंह करके (आयत 1) उन्हें एक बेईमान भण्डारी का दृष्टांत बताया।[27] भण्डारी का काम किसी दूसरे की वस्तुओं की रखवाली करना होता था (देखें लूका 12:41-48; 1 कुरिन्थियों 4:2)।

इस भण्डारी के बारे में यीशु की कहानी उसके असामान्य दृष्टांतों में से एक है। सरसरी तौर पर, देखने से बेईमान होने की बात अत्यधिक प्रशंसनीय लगती है।[28] उस भण्डारी ने उसे सौंपे गए धन का सही इस्तेमाल नहीं किया था (आयत 1) और उसे दण्ड मिलने वाला था (आयत 2)।[29] उसने फुर्ती से अपने स्वामी के कर्ज़दारों को बुलाकर किताबों में उनका कर्ज़ कम कर दिया (आयतें 5-7) ताकि काम से निकाले जाने पर वह उनसे अपनी दोस्ती की कीमत वसूल सके (आयत 4)। शीघ्र ही पूर्व-स्वामी बनने वाले

उसके बॉस ने इस व्यक्ति की चतुराई के लिए इसकी सराहना की (आयत 8क)।[30]

क्या यीशु भण्डारीपन में बेईमानी की प्रशंसा कर रहा था? कदापि नहीं (ध्यान दें 16:17)। जो बात वह समझाना चाह रहा था, वह आयत 8 के अन्त में मिलती है: ''क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं।'' इसे यूं भी कहा जा सकता है कि परमेश्वर के कामों को करने के लिए परमेश्वर के लोगों की तुलना में अधर्मी लोग अधर्म के कामों को पूरा करने के लिए धन का इस्तेमाल अच्छी तरह कर सकते हैं।

बेईमान भण्डारी ने धन से मित्र बना लिए थे। इसीलिए, मसीह ने कहा, ''अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो;[31] ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें'' (आयत 9)। धन से ''मित्र बनाने'' का हमारा ढंग लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करना है। यीशु के अनुसार, दूसरों को देना स्वर्ग में धन जमा करना है और इससे उन लोगों द्वारा जिनकी हम ने पृथ्वी पर सहायता की है, गर्मजोशी से स्वागत का आश्वासन भी मिलता है। यहां शिक्षा मुख्यतया लूका 12:33 वाली ही है: ''अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिए ... स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं।''[32]

धर्मी भण्डारी (16:10-13)

मसीह ने दृष्टांत में अच्छे भण्डारी, विशेषकर अपने धन पर सामान्य ताड़ना देने पर ज़ोर दिया (आयतें 10-12)। उसने धन को स्वामी बनने देने की अनुमति देने के विरुद्ध चेतावनी दी (आयत 13; देखें मत्ती 6:24)। वह दृष्टांत की भूमिका बताकर इन शब्दों से अपनी शिक्षा को जारी रख सकता था कि ''फरीसियों के कपट रूपी खमीर से चौकस रहना'' (लूका 12:1), क्योंकि ''फरीसी लोभी थे'' (लूका 16:14)। उनका विश्वास था कि धनी होना परमेश्वर को स्वीकृत होने का स्पष्ट प्रमाण है।

मुझे ''नरक'' से बाहर रहने का ढंग बताने वाली कहानी सुनाओ (लूका 16:14-31)

यीशु के संसार में स्पष्ट रूप से धन सबसे महत्वपूर्ण नहीं था। जब फरीसियों ने ''ये सब बातें'' सुनीं, तो वे उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे (आयत 14)।[33] उन्हें यीशु को लोगों की नज़रों में गिराने की उम्मीद थी।

घृणित धनी (16:15-18)

मसीह ने फरीसियों को डांटकर अपनी प्रतिक्रिया दी:[34]

- उसने उन्हें स्वयं को लोगों की नज़र में धर्मी ठहराने के लिए डांटा (आयत 15)।
- उसने उन्हें अपने मानवनिर्मित नियमों तथा मर्यादाओं से परमेश्वर के राज्य में

अपने ढंग को ''मनवाने'' की कोशिश करने के लिए डांटा (आयत 16)।[35]

- उसने उन्हें परमेश्वर के अविनाशी वचन के बदले मनुष्यों की बनाई हुई परम्पराओं का ध्यान रखने के लिए डांटा (आयतें 17, 18)।[36]

अधोलोक में एक धनी (16:19-31)

डांटने के बाद मसीह ने उन्हें एक और कहानी बताई। यदि बेईमान भण्डारी पर उसके दृष्टांत से धन के लोभी परेशान थे, तो इस दृष्टांत से वे और भी परेशान हुए होंगे। यह एक *धनी* मनुष्य की कहानी थी, जो खोया हुआ था।

लूका 16:19-31 को आम तौर पर ''धनवान[37] और लाज़र का दृष्टांत'' के रूप में जाना जाता है। यह उस धनी मनुष्य की कहानी है, जो भण्डारीपन की परीक्षा में असफल रहा था। उसने लाज़र नाम के एक भिखारी की सहायता करने के अवसर का लाभ नहीं उठाया था।[38] जब वह भिखारी मर गया, तो उसे स्वर्गदूतों ने ''अब्राहम की गोद'' में डाल दिया (आयत 22); परन्तु जब वह धनवान मरा, तो उसने स्वयं को ''पीड़ा में पड़े हुए'' पाया (आयत 23)।

धनवान ने मिन्नत की कि लाज़र को उसके पांच भाइयों को सावधान करने के लिए पृथ्वी पर वापस भेजा जाए, पर उसे बताया गया कि ''उनके पास तो मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। ... जब वे मूसा और भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे'' (आयतें 29, 31)। ये शब्द विशेष तौर पर फरीसियों के लिए थे: उनके पास मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें थीं, जो यीशु की गवाही देती थीं (लूका 24:44), परन्तु उन्होंने उसे मानने से इनकार कर दिया। इसी प्रकार यीशु के मुर्दों में से जी उठने के बावजूद उन्होंने विश्वास नहीं किया (लूका 7:11-17; 8:41-56; देखें यूहन्ना 11:1-53; 12:9-11) था। वास्तव में बाद में यदि स्वयं यीशु भी मुर्दों में से जी उठने के बाद आ जाता, तो उन्होंने विश्वास नहीं करना था (मत्ती 28:11-15; प्रेरितों 4:1-22)।

कुछ लोगों जिन्हें लूका 16:19-31 के अर्थ पसन्द नहीं हैं,[39] ''फरीसी'' शब्द को यह सिखाने के लिए कि यह वृत्तांत परीकथा से बढ़कर नहीं है, अगवा कर लिया है। इन तथ्यों को याद रखें:

(1) बाइबल इस कहानी को दृष्टांत नहीं कहती। यदि यह दृष्टांत है, तो यह एकमात्र दृष्टांत है, जिसमें मुख्य पात्र (लाज़र) का नाम दिया गया है। इसके अलावा यदि यह दृष्टांत है, तो यह उन कुछेक दृष्टांतों में से एक है, जो जीवन की सामान्य परिस्थितियों पर आधारित नहीं हैं, जिनसे यीशु के सुनने वाले परिचित थे। निश्चय ही, जैसा कि हमने ज़ोर दिया है, ''दृष्टांत'' शब्द का इस्तेमाल सुसमाचार के वृत्तांतों में प्राय: बड़े लचीले ढंग से हुआ है; कई बार इसका अर्थ ''उदाहरण'' से थोड़ा अधिक होता है (इस पाठ में लूका 14:7-10 देखें)। इसलिए धनी मनुष्य और लाज़र की कहानी के ''दृष्टांत'' को कहानी कहने में तब तक कोई बुराई नहीं है जब तक हम यह याद रखते हैं, कि यह प्रभु की ओर से नहीं बल्कि

हमारी ओर से दिया गया नाम है।

(2) इस कहानी को ''दृष्टांत'' भी कहें, तो भी इसका अर्थ यह नहीं है कि हम इस पर ''कल्पना'' का ठप्पा लगा रहे हैं। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने टिप्पणी की है, ''पर यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु के दृष्टांतों में कभी न तो काल्पनिक स्थितियों का परिचय दिया गया है और न ही कहीं प्रकृति की व्यवस्था और नियम का उल्लंघन हुआ है।''[40] यह संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि लूका 16:19-31 के दृश्य मृत्यु के बाद आत्माओं की यथार्थ स्थिति दिखाते हैं: खोए हुओं की श्रापित स्थिति और उनकी जो बचाए गए हैं, आशीषित स्थिति। अनादि काल से होने वाले के कारण (यूहन्ना 1:1, 2, 14), ''यीशु ही पृथ्वी का एकमात्र व्यक्ति था, जो मृत्यु के बाद के लोगों के अनुभवों का वर्णन कर सकता था।''[41]

सारांश

यदि हम इन पाठों की व्यक्तिगत प्रासंगिकताएं बनाएं, तो इनसे व्यावहारिक ढंग से हमारे जीवनों में प्रभाव पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, हम अपने घरों में उन लोगों को निमन्त्रण दे सकते हैं, जिन्हें हमने पहले कभी निमन्त्रण देने के योग्य नहीं समझा, शायद किसी ऐसे व्यक्ति को भी जो बदले में हमें न बुला सकता हो। हम अपने आप से पूछ सकते हैं, ''क्या मैं यीशु की तरह पापियों का मित्र हूं?'' शायद इस सप्ताह हम किसी से मेल मुलाकात करने का मन बना लें।[42] और कुछ नहीं तो उपेक्षित निमन्त्रण के दृष्टांत (लूका 14:16-24) से हमें अपने आप से पूछना चाहिए, ''क्या मैंने प्रभु का निमन्त्रण स्वीकार किया है?'' धनवान और लाज़र की कहानी से हमारे लिए अपने अन्दर टटोलने वाला प्रश्न उठना चाहिए कि ''क्या मैं मरने के लिए तैयार हूं?''

नोट्स

इस पाठ के लिए दी गई आयतों में प्रचार की अपार सम्भावनाएं हैं।

लूका 14

उपेक्षित निमन्त्रण का दृष्टांत (लूका 14:16-24) उन बहानों पर प्रचार करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, जो यीशु के पीछे न चलने के लिए लोग अक्सर बनाते हैं। किसी ने कहा है कि बहाना ''झूठ से भरे हुए तर्क का ऊपरी भाग'' है। कैरोल साइटस इस वचन पर अपने प्रवचन को ''ए रियल्टर, ए फार्मर, एण्ड ए हैनपैकड हस्बेंड'' कहता है।[43]

लूका 15

लूका 15 की खोई हुई वस्तुओं पर कई प्रवचन दिए जा चुके हैं। इस अध्याय पर प्रचार करने की तैयारी करते हुए, उस पुत्र पर प्रचार करने को नज़रअन्दाज न करें जो ''घर में खो गया'' था। इस पाठ के बाद बड़े भाई पर प्रवचन नोट्स देखें।

लूका 16

लूका 16 में धनवान और लाज़र के वृत्तांत ने कई प्रचारकों को सम्मोहित किया है। इस पुस्तक में इस अध्याय के लिए मेरे पास एक और ढंग है: ''नरक से एक पत्र'' शीर्षक से एक विवरणात्मक प्रवचन। ''मसीह का जीवन, भाग 7'' में मैं ''मृतक कहां हैं?'' शीर्षक से एक अतिरिक्त पाठ के रूप में एक और ढंग मिलाने की योजना बना रहा हूं। इस कहानी पर नील प्रायोर का एक प्रवचन है, जिसे वह ''तीन दृश्यों में विजय और त्रासदी'' नाम देते हैं।[44] दृश्य 1, धनवान और लाज़र के जीवनों में अन्तर दिखाता है: धनवान विजय का आनन्द लेता है, जबकि लाज़र त्रासदी को झेलता है। दृश्य 2 में, दोनों के जनाज़ों की कल्पना है: नि:संदेह, धनवान को ठाठ-बाठ से (अतिरिक्त विजय में) दफ़नाया जाता है, जबकि लाज़र की लाश को शायद किसी गुमनाम कब्र में फैंक दिया जाता है (त्रासदी और बढ़ गई)। फिर, दृश्य 3 में, दोनों को अधोलोक में दिखाया जाता है: अन्ततः लाज़र विजयी है, जबकि धनवान त्रासदी झेल रहा है। प्रायोर ज़ोर देता है कि ''दृश्य 3'' ही मुख्य है।

इस पाठ की कई आयतों का इस्तेमाल खर्च का हिसाब लगाने, अच्छा भण्डारी बनने और अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्तों पर विचार करने के लिए किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]आप ''दृष्टांत'' के अर्थ की समीक्षा करके यीशु द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले दृष्टांतों की समीक्षा कर सकते हैं। [2]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 175. [3]इस समय के दौरान कहे गए दृष्टांतों की सही-सही संख्या पर विद्वान एकमत नहीं हैं, क्योंकि संख्या इस पर निर्भर करती है कि कोई दृष्टांत का क्या अर्थ निकालता है। संख्या का महत्व नहीं है। [4]आयत 1 के अनुसार, यीशु फरीसियों के *अगुओं* में से किसी के घर खाने के लिए गया। ''फरीसी असंगठित दल थे, इसलिए उनके हाकिम [या अगुवे] *पद* से नहीं बल्कि प्रभाव से होते थे'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 492)। [5]यीशु के इस निमन्त्रण को स्वीकार करने पर चर्चा के लिए, ''एक चरवाहे की चिंता'' पाठ में देखें। [6]''जलन्धर'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''dropsy'' यूनानी भाषा के शब्द *hudrops* से लिया गया है जो ''जल'' के लिए यूनानी शब्द से निकला है (जिससे अंग्रेज़ी में उपसर्ग ''हाइड्रो'' मिला है)। [7]पानी का बहना गुर्दों के सही काम न करने का लक्षण भी हो सकता है (चार्ल्स बी. क्लेमैन, मैडिकल एडि., *अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन होम मैडिकलइन्साइक्लोपिडिया,* अंक 1 [न्यू यॉर्क: रैंडम हाउस, 1989] S.V. ''dropsy'')। [8]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''पुत्र'' है, और कुछ में ''गधा।'' NASB में ''पुत्र'' दिया गया है। [9]लूका 14:5 में यूनानी शब्द के अनुवाद ''कुंए'' का अर्थ ''गड्ढा'' हो सकता है, परन्तु अधिक सामान्य अर्थ ''कुआं'' ही है। (यही शब्द यूहन्ना 4:11, 12 में याकूब के कुएं के लिए इस्तेमाल हुआ है।) [10]जहां मैं रहता हूं, वहां हम कह सकते हैं, ''वे सभी दावत के बड़े मेज़ पर ही बैठना चाहते थे।'' इस व्याख्या को अपने क्षेत्र की रीति के अनुसार बदल लें।

[11]अपने मित्रों को अपने घरों में निमन्त्रण देने में कोई बुराई नहीं है। यीशु को मारथा और मरियम जैसे मित्रों के घर जाना अच्छा लगता था (लूका 10:38)। इसका अर्थ यह है कि हमारा आतिथ्य सत्कार केवल उन्हीं तक *सीमित* नहीं होना चाहिए, जो बदले में हमें अपने घर बुला सकें। [12]कुछ लोग ''धर्मियों के जी उठने''

वाक्यांश को यह सिखाने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि दो पुनरुत्थान होंगे: धर्मियों का पुनरुत्थान और बाद में किसी समय, अधर्मियों का पुनरुत्थान। परन्तु बाइबल सिखाती है कि भले और बुरे *दोनों* का *एक ही* पुनरुत्थान होगा (यूहन्ना 5:28, 29)। लूका 14:14 में यीशु सिखा रहा था कि पुनरुत्थान में *आशीषित* केवल धर्मी होंगे। [13]मसीहा के आने वाले राज्य के सम्बन्ध में यहूदियों में कई विचार पाए जाते थे। [14]इस दृष्टांत को ''उपेक्षित निमन्त्रण का दृष्टांत'' सहित कई नाम दिए जाते हैं। [15]लूका 14:23 में ''विवश'' शब्द बलपूर्वक नहीं बल्कि समझा कर है। शोषित लोग किसी धनी या सामर्थी व्यक्ति के घर जाने से झिझकेंगे। [16]यह उत्सुकता यीशु की मृत्यु से कुछ दिन पहले यरूशलेम में विजयी प्रवेश से चरम पर पहुंच गई होगी (मत्ती 21:1-11)। [17]लूका 14:26 की तुलना मत्ती 10:37 से करें। लूका 14:26 पर चर्चा के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 167-168 पर देखें। लूका 14:27 की तुलना मत्ती 10:38; लूका 16:24; मरकुस 8:34; लूका 9:23 से करें। लूका 9:23 पर चर्चा के लिए, ''होने-वाले चेले'' पाठ में देखें। [18]इस बात की चिन्ता न करें कि इस उदाहरण में ''शत्रु'' कौन है। दृष्टांत/उदाहरण में दी हर बात का ''कुछ अर्थ'' हो, आवश्यक नहीं है। [19]लूका 12:33 से तुलना करें। लूका 12:33 पर संक्षिप्त टिप्पणियों के लिए, ''नई व पुरानी बातें'' पाठ में देखें। सम्पत्ति को छोड़ना अपने साथ पूरा समय चलने की इच्छा रखने वालों के लिए यीशु की चुनौती में शामिल होता था। इसके अलावा, मसीही लोगों पर बाद में आए सताव के प्रकाश में (प्रेरितों 8:1), उसके पीछे आने वाले के लिए अपनी सम्पत्ति छोड़ने को तैयार होना आवश्यक था। [20]कुछ लोगों ने सांसारिक गतिविधियों में अपने योगदान को उचित ठहराने के लिए लूका 15:1, 2 का इस्तेमाल करने का प्रयास किया है। यीशु के *उद्देश्य* पर विचार करें। वह उनके साथ उनकी आत्माओं को बचाने के लिए खाता था (लूका 5:30-32)। यीशु के *भाग लेने* की सीमा पर विचार करें: वह उनके साथ खाता था, पर उनके पापपूर्ण कार्यों में उनके साथ भागीदार नहीं होता था।

[21]यीशु ने पहले एक अलग प्रासंगिकता के साथ खोई हुई भीड़ का उदाहरण इस्तेमाल किया (मत्ती 18:12-14)। [22]क्योंकि कोई भी धर्मी नहीं है (रोमियों 3:10) और सब को मन फिराने की आवश्यकता है (प्रेरितों 17:30), लूका 15:7 का अन्तिम भाग विडम्बना से भरा लगता है कि फरीसी अपने आप को धर्मी *समझते* थे, जिन्हें मन फिराने की कोई आवश्यकता न हो (देखें लूका 18:9)। [23]जो सिक्का उसने खोया था वह एक द्राखमा था, जिसकी कीमत एक दिन की मजदूरी के बराबर, एक दीनार जितनी थी। [24]हम में से बहुतों ने ''उड़ाऊ'' शब्द और इसके उपयोग को इतनी बार सुना है कि हमारे मनों में यह ''अविश्वासी'' या ''पापी'' का पर्याय ही बन गया है। इस शब्द का अर्थ वास्तव में ''खर्चीला या फ़िज़ूल खर्च'' है। [25]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 216. [26]दृष्टांत के इस भाग पर नोट्स के लिए, ''शेष कहानी'' नामक पाठ देखें। [27]NASB तथा कई आधुनिक अनुवादों में ''manager'' है। द कंटैम्परेरी इंग्लिश वर्ज़न और न्यू सैंचुरी वर्ज़न में ''उसके कारोबार को सम्भालने के लिए प्रबन्धक।'' इस दृष्टांत के लिए अन्य नाम ''अधर्मी प्रबन्धक/मैनेजर का दृष्टांत,'' ''बेईमान प्रबन्धक का दृष्टांत,'' और ''अधर्मी भण्डारी का दृष्टांत'' हैं (देखें लूका 16:8)। [28]सुझाव दिया गया है कि यीशु ने इस उदाहरण का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि चुंगी लेने वाले और पापी जो उसकी सुनते थे, उन्हें मसीह द्वारा वर्णित दुष्ट माना जा सकता था। [29]जो काम इस व्यक्ति ने किया सामान्यतया वह दासों द्वारा किया जाता था, परन्तु यह तथ्य कि इस भण्डारी को *निकाल दिया गया* संकेत देता है कि वह गुलाम नहीं, बल्कि स्वतन्त्र था। [30]KJV में कहा गया है कि इस बेईमान भण्डारी ने ''बुद्धिमता से काम किया था।'' यह बिल्कुल सही अनुवाद है, परन्तु यह समझ लें कि इस आदमी की ''बुद्धि'' *इस जगत की* बुद्धि थी (देखें 1 कुरिन्थियों 1:20; याकूब 3:15)। ''चतुराई'' से स्पष्ट हो जाता है। धनवान के शब्द सांसारिक सोच वाले व्यक्ति द्वारा किसी चालाक बदमाश की प्रशंसा करने की तरह थे।

[31]धन अपने आप में बुरा या अच्छा नहीं है। लूका 16:9 में इसे ''अधर्म का धन'' कहा गया है, क्योंकि इसकी इच्छा करने से बहुत से लोग अधर्मी हुए हैं (1 तीमुथियुस 6:10)। [32]''नई व पुरानी बातें'' पाठ में लूका 12:33 पर टिप्पणियां देखें। [33]लूका 23:35 से तुलना करें। [34]अन्य स्थानों पर फरीसियों के बारे में बाइबल की शिक्षा से सम्बन्धित लूका में मसीह के शब्दों का सार नीचे दिया गया है। [35]यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मलाकी के बाद से चार सौ वर्ष की ''भविष्यवाणी की चुप्पी'' तोड़ी। यूहन्ना से लेकर शुभ समाचार

(''सुसमाचार'') का प्रचार किया गया था कि ''राज्य निकट आया है।'' परन्तु राज्य में परमेश्वर के ढंग को मानने (यीशु में विश्वास लाकर उसके पीछे चलने) के बजाय, फरीसी अपने ही नियम और कानून लागू करके अपने ढंग ''थोपने'' का प्रयास कर रहे थे। यह ढंग न तो तब काम आया था और न अब आएगा। [36]लूका 16:17 की तुलना मत्ती 5:18 से और लूका 16:18 की तुलना मत्ती 5:31, 32 से करें। फरीसियों ने जैसे *माता-पिता की देखभाल* के बारे में परमेश्वर के नियमों को एक ओर करके अपनी परम्पराएं चला दी थीं (मत्ती 15:1-9), वैसे ही उन्होंने *विवाह* पर परमेश्वर के नियमों की जगह अपनी परम्पराएं शुरू कर दी थीं। विवाह तथा तलाक के विषय पर हम और विस्तार में मत्ती 19:1-9 का अध्ययन करने के समय चर्चा करेंगे। [37]इस धनवान को अक्सर ''Dives'' कहा जाता है, पर यह उसका नाम नहीं था। ''डाइव्स'' ''धनवान'' के लिए लातीनी शब्द है। दृष्टांत में लाज़र का नाम तो दिया गया है, पर धनवान का नहीं। [38]इस ''दृष्टांत'' पर अधिक चर्चा के लिए, पुस्तक में आगे '' 'नरक' से एक पत्र'' देखें। [39]इसमें वे लोग शामिल हैं, जो यह विश्वास नहीं करते कि मुर्दे होश में हैं और जो मृत्यु के बाद दण्ड में विश्वास नहीं करते। [40]मैक्गार्वे एण्ड पैंडलटन, 514.

[41]कार्टर, 221. [42]यदि इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास में किया जाता है, तो आपको चाहिए कि चर्चा करवाएं कि उन पापियों के साथ जिन्हें आप और आपके छात्र मित्र बना सकते हैं, कैसे सम्पर्क किया जाए। उसे जिसका स्कूल जाने की उम्र वाला बच्चा है, सुझाव है कि वे किसी बच्चे के माता-पिता के साथ मेल-जोल बढ़ाएं जो उनके बच्चे के साथ स्कूल जाता हो। [43]जुड्सोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, जुड्सोनिया, आरकैंसा में 26 अक्तूबर 1999 को दिया गया संदेश। [44]ब्राउन ट्रेल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, बेडफोर्ड, टैक्सस में सितम्बर 1985 को दिया गया संदेश।